अध्याय 7: जलाते चलो

विषय-सूची 8 प्रश्नावली · 16 प्रश्न

प्रश्नावली 7.1	मेरी समझ से	2 प्रश्न
प्रश्नावली 7.2	मिलकर करें मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 7.3	सोच-विचार के लिए	3 प्रश्न
प्रश्नावली 7.4	मिलान (स्तंभ 1 और स्तंभ 2)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 7.5	शब्दों के रूप	1 प्रश्न
प्रश्नावली 7.6	अर्थ की बात	2 प्रश्न
प्रश्नावली 7.7	पंक्ति से पंक्ति	1 प्रश्न
प्रश्नावली 7.8	तिथिपत्र	5 प्रश्न

प्रश्नावली 7.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

निम्नलिखित में से कौन-सी बात इस कविता में मुख्य रूप से कही गई है? (क) भलाई के कार्य करते रहना (ख) दीपावली के दीपक जलाना (ग) बल्ब आदि जलाकर अंधकार दूर करना (घ) तिमिर मिलने तक नाव चलाते रहना

हल

सही उत्तर: (क) भलाई के कार्य करते रहना।
इस कविता में कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी 'दीये' को भलाई और प्रेम (स्नेह) का प्रतीक मानते हैं।
कविता का मूल संदेश है — निराश हुए बिना निरंतर भलाई के कार्य करते रहो, एक न एक दिन अंधकार अवश्य दूर होगा।
दीपावली के दीपक जलाना (ख) इस कविता का विषय नहीं है; दीपक यहाँ प्रतीक है।
बल्ब जलाना (ग) सही नहीं — कविता में विद्युत-दीयों को बुझाने की बात कही गई है।
तिमिर मिलने तक नाव चलाना (घ) अधूरा विचार है और कविता का मूल भाव नहीं है।

उत्तर: (क) भलाई के कार्य करते रहना।

प्रश्न 2

"जला दीप पहला तुम्हीं ने तिमिर की, चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी" — यह वाक्य किससे कहा गया है? (क) तूफ़ान से (ख) मनुष्यों से (ग) दीपकों से (घ) तिमिर से

हल

सही उत्तर: (ख) मनुष्यों से।
कवि यह पंक्तियाँ मनुष्यों को संबोधित करके कह रहे हैं।
'तुम्हीं ने' — यह संबोधन मनुष्य (व्यक्ति/पाठक) के लिए है।

कवि कह रहे हैं कि मनुष्य ने ही सबसे पहले अंधकार को चुनौती दी थी और पहला दीप जलाया था। इसलिए मनुष्यों से ही यह प्रेरणा देने वाली बात कही गई है।

उत्तर: (ख) मनुष्यों से।

प्रश्नावली 7.2 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

कविता में से चुने गए निम्नलिखित शब्दों को उनके सही अर्थों या संदर्भों से मिलाइए— शब्द: 1. अमावस 2. पूर्णिमा 3. विद्युत-दिये 4. युग अर्थ या संदर्भ: 1. पूर्णमासी, वह तिथि जिस रात चंद्रमा पूरा दिखाई देता है। 2. विद्युत दिये अर्थात बिजली से जलने वाले दीपक, बल्ब आदि उपकरण। 3. समय, काल, युग संख्या में चार माने गए हैं — सत्ययुग (सतयुग), त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग। 4. अमावस्या, जिस रात आकाश में चंद्रमा दिखाई नहीं देता।

हल

1. अमावस → 4. अमावस्या, जिस रात आकाश में चंद्रमा दिखाई नहीं देता।
2. पूर्णिमा → 1. पूर्णमासी, वह तिथि जिस रात चंद्रमा पूरा दिखाई देता है।
3. विद्युत-दिये → 2. विद्युत दिये अर्थात बिजली से जलने वाले दीपक, बल्ब आदि उपकरण।
4. युग → 3. समय, काल; युग संख्या में चार माने गए हैं — सत्ययुग, त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग।

उत्तर: अमावस→अमावस्या (चंद्रमा न दिखना); पूर्णिमा→चंद्रमा पूरा दिखना; विद्युत-दिये→बिजली के बल्ब; युग→समय/काल (चार युग)।

प्रश्नावली 7.3 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

(क) कविता में अँधेरे या तिमिर के लिए किन वस्तुओं के उदाहरण दिए गए हैं?

हल

कविता में अँधेरे या तिमिर (darkness) को दर्शाने के लिए निम्नलिखित वस्तुओं/बिम्बों का उदाहरण दिया गया है —

1. अमावस निशा-सी — अमावस्या की रात जैसा घना अंधकार ('मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में / घिरी आ रही है अमावस निशा-सी')।
2. निशा — रात का अंधेरा ('कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा')।
3. तिमिर की शिला — पत्थर जैसा कठोर, भारी अंधकार ('युगों से तुम्हीं ने तिमिर की शिला पर')।
4. तिमिर की सरित — अंधकार रूपी नदी ('तिमिर की सरित पार करने तुम्हीं ने')।

इस प्रकार अमावस, निशा, तिमिर की शिला और तिमिर की सरित — ये सब अँधेरे के प्रतीक-बिम्ब हैं।

उत्तर: कविता में अँधेरे के लिए — अमावस निशा-सी, निशा, तिमिर की शिला और तिमिर की सरित — इन उदाहरणों का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 2

(ख) यह कविता आशा और उत्साह जगाने वाली कविता है। इसमें क्या आशा की गई है? यह आशा क्यों की गई है?

हल

कविता में जो आशा की गई है—

कवि को आशा है कि यदि मनुष्य निरंतर भलाई, प्रेम और स्नेह के दीये जलाता रहे तो एक न एक दिन संसार का अंधकार (बुराई, निराशा, दुःख) अवश्य दूर होगा।

पंक्तियाँ: 'कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा', 'कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा', 'कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा'।

यह आशा क्यों की गई है—

क्योंकि मनुष्य युगों से अंधकार को चुनौती देता आया है। बार-बार तूफ़ान ने दीयों को बुझाया, फिर भी मनुष्य ने हार नहीं मानी।

कवि का विश्वास है कि निरंतर प्रयास और स्नेह-भरे कार्यों से समाज में सुख, शांति और उजाला अवश्य आएगा।

रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि — कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा।

उत्तर: कविता में आशा है कि निरंतर भलाई और स्नेह के कार्यों से संसार का अंधकार दूर होगा और सवेरा (सुख-शांति) अवश्य आएगा। यह आशा इसलिए की गई है क्योंकि मनुष्य युगों से हार न मानते हुए प्रयास करता आया है।

प्रश्न 3

(ग) कविता में किसे जलाने और किसे बुझाने की बात कही गई है?

हल

जलाने की बात—
कविता में स्नेह (प्रेम) से भरे दीयों को जलाते रहने की बात कही गई है: 'जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर'।
ये दीये प्रतीकात्मक हैं — अर्थात् भलाई, करुणा और प्रेम के कार्यों को निरंतर करते रहना।

बुझाने की बात—
बिना स्नेह के जल रहे विद्युत-दीयों (बिजली के बल्बों) को बुझाने की बात कही गई है: 'बिना स्नेह विद्युत-दिये जल रहे जो / बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा।'
अर्थात् केवल भौतिक/वैज्ञानिक प्रगति — बिना मानवीय प्रेम और करुणा के — किसी काम की नहीं।

उत्तर: स्नेह-भरे दीयों (भलाई के कार्यों) को जलाने और बिना स्नेह के जलने वाले विद्युत-दीयों (केवल भौतिक प्रगति) को बुझाने की बात कही गई है।

प्रश्नावली 7.4 — मिलान (स्तंभ 1 और स्तंभ 2)

प्रश्न 1

स्तंभ 1 और स्तंभ 2 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। मिलते-जुलते भाव वाली पंक्तियों को रेखा खींचकर जोड़िए— स्तंभ 1: 1. कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा। 2. जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर। 3. मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है अमावस निशा-सी। 4. बिना स्नेह विद्युत-दिये जल रहे जो बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा। स्तंभ 2: 1. विश्व की भलाई का ध्यान रखे बिना प्रगति करने से कोई लाभ नहीं होगा। 2. विश्व में सुख-शांति क्यों कम होती जा रही है? 3. विश्व की समस्याओं से एक न एक दिन छुटकारा अवश्य मिलेगा। 4. दूसरों के सुख-चैन के लिए प्रयास करते रहिए।

हल

1. 'कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा।' → 3. विश्व की समस्याओं से एक न एक दिन छुटकारा अवश्य मिलेगा।
(दोनों में आशा है कि संघर्ष का अंत अवश्य होगा।)
2. 'जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर।' → 4. दूसरों के सुख-चैन के लिए प्रयास करते रहिए।
(दोनों में निरंतर भलाई करते रहने का संदेश है।)
3. 'मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।' → 2. विश्व में सुख-शांति क्यों कम होती जा रही है?
(दोनों में वर्तमान समय में फैले अंधकार/अशांति पर प्रश्न है।)
4. 'बिना स्नेह विद्युत-दिये जल रहे जो / बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा।' → 1. विश्व की भलाई का ध्यान रखे बिना प्रगति करने से कोई लाभ नहीं होगा।
(दोनों में कहा गया है कि स्नेह/करुणा के बिना केवल भौतिक प्रगति व्यर्थ है।)

उत्तर: 1→3, 2→4, 3→2, 4→1।

प्रश्नावली 7.5 — शब्दों के रूप

प्रश्न 1

"कि जिससे अमावस बने पूर्णिमा-सी" — 'अमावस' का अर्थ है 'अमावस्या'। इन दोनों शब्दों का अर्थ तो समान है लेकिन लिखने-बोलने में थोड़ा-सा अंतर है। ऐसे ही कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इनसे मिलते-जुलते दूसरे शब्द कविता से खोजकर लिखिए— 1. दिया 2. उजेला 3. अनगिन

हल

1. दिया → दीप (कविता में: 'जला दीप पहला', 'दिये अनगिनत है')
दिया और दीप दोनों का अर्थ है — दीपक।
2. उजेला → उजाला (कविता में: 'उसी से तिमिर को उजेला मिलेगा')
उजेला और उजाला दोनों का अर्थ है — प्रकाश, रोशनी।
3. अनगिन → अनगिनत (कविता में: 'दिये अनगिनत है निरंतर जलाए')
अनगिन और अनगिनत दोनों का अर्थ है — जिन्हें गिना न जा सके, असंख्य।

उत्तर: 1. दिया ↔ दीप; 2. उजेला ↔ उजाला; 3. अनगिन ↔ अनगिनत।

प्रश्नावली 7.6 — अर्थ की बात

प्रश्न 1

(क) "जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर" — इस पंक्ति में 'चलो' के स्थान पर 'रहो' शब्द रखकर पढ़िए। इस शब्द के बदलने से पंक्ति के अर्थ में क्या अंतर आ रहा है?

हल

मूल पंक्ति: 'जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर'
बदली हुई पंक्ति: 'जलाते रहो ये दिये स्नेह भर-भर'

'चलो' के साथ अर्थ—
'चलो' शब्द में गति और प्रवाह का भाव है। इसमें आगे बढ़ते हुए, चलते हुए दीये जलाते रहने का आह्वान है।
यह जीवन की यात्रा के साथ निरंतर भलाई करते रहने का बोध देता है — रुको मत, बस चलते रहो और जलाते रहो।

'रहो' के साथ अर्थ—
'रहो' शब्द में केवल ठहराव और स्थिरता का भाव है — एक जगह टिककर दीये जलाते रहो।
इसमें गति और आगे बढ़ने का उत्साह नहीं है।

अंतर: 'चलो' पंक्ति को अधिक प्रेरणादायक और गतिशील बनाता है; 'रहो' से पंक्ति का उत्साह कम हो जाता है।

उत्तर: 'चलो' में गति और आगे बढ़ने का उत्साहपूर्ण भाव है; 'रहो' से केवल स्थिरता का बोध होता है और पंक्ति का जोश कम हो जाता है।

प्रश्न 2

(ख) नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। पंक्तियों के सामने लगभग समान अर्थों वाले कुछ शब्द दिए गए हैं। आप उनमें से वह शब्द चुनिए, जो उस पंक्ति में सबसे उपयुक्त रहेगा— 1. बहाते चलो ..... तुम वह निरंतर (नैया, नाव, नौका) कभी तो तिमिर का ..... मिलेगा। (तट, तीर, किनारा) 2. रहेगा ..... पर दिया एक भी यदि (धरा, धरती, भूमि) कभी तो निशा को ..... मिलेगा। (प्रात:, सुबह, सवेरा) 3. जला दीप पहला तुम्हीं ने ..... (अंधकार, तिमिर, अँधेरे) चुनौती ..... बार स्वीकार की थी। (प्रथम, अव्वल, पहली)

हल

1. बहाते चलो नाव तुम वह निरंतर — सबसे उपयुक्त शब्द: नाव।
कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा — सबसे उपयुक्त शब्द: किनारा।
(कविता में मूल शब्द 'नाव' और 'किनारा' हैं; ये ही सबसे उचित हैं क्योंकि ये कविता की लय और भाव के अनुकूल हैं।)

2. रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि — सबसे उपयुक्त शब्द: धरा।
कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा — सबसे उपयुक्त शब्द: सवेरा।
('धरा' और 'सवेरा' तत्सम/काव्य-भाषा के शब्द हैं और कविता की भाषा-शैली के साथ सबसे उचित बैठते हैं।)

3. जला दीप पहला तुम्हीं ने तिमिर — सबसे उपयुक्त शब्द: तिमिर।
चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी — सबसे उपयुक्त शब्द: प्रथम।
('तिमिर' और 'प्रथम' कविता के तत्सम-बहुल काव्य-शैली के अनुरूप हैं।)

उत्तर: 1. नाव, किनारा; 2. धरा, सवेरा; 3. तिमिर, प्रथम — ये शब्द कविता में मूल रूप से प्रयुक्त हैं और काव्य-भाषा व लय की दृष्टि से सर्वाधिक उपयुक्त हैं।

प्रश्नावली 7.7 — पंक्ति से पंक्ति

प्रश्न 1

कविता की इस पंक्ति को वाक्य के रूप में इस प्रकार लिखा गया है— "जला दीप पहला तुम्हीं ने तिमिर की, चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी।" → "तुम्हीं ने पहला दीप जला तिमिर की चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी।" इसी प्रकार नीचे दी गई पंक्तियों को वाक्यों के रूप में लिखिए— 1. बहाते चलो नाव तुम वह निरंतर। 2. जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर। 3. बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा। 4. मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।

हल

1. 'बहाते चलो नाव तुम वह निरंतर।' का वाक्य-रूप—
तुम वह नाव निरंतर बहाते चलो।

2. 'जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर।' का वाक्य-रूप—
ये दिये स्नेह भर-भर जलाते चलो।

3. 'बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा।' का वाक्य-रूप—
इन्हें बुझाओ, (क्योंकि) इस प्रकार पथ नहीं मिल सकेगा।

4. 'मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।' का वाक्य-रूप—
मगर आज विश्व पर दिवस (दिन) में ही अमावस जैसी निशा (रात जैसा अंधकार) क्यों घिरी आ रही है?

उत्तर: 1. तुम वह नाव निरंतर बहाते चलो। 2. ये दिये स्नेह भर-भर जलाते चलो। 3. इन्हें बुझाओ, इस प्रकार पथ नहीं मिल सकेगा। 4. मगर आज विश्व पर दिन में ही अमावस जैसा अंधकार क्यों घिरी आ रही है?

प्रश्नावली 7.8 — तिथिपत्र

प्रश्न 1

(क) दिए गए महीने (जनवरी 2023) में कुल कितने दिन हैं?

हल

तिथिपत्र (कैलेंडर) में जनवरी 2023 के अंतिम दिनाँक को देखें।
कैलेंडर में अंतिम तारीख 31 (मंगलवार) दिखाई दे रही है।
अतः जनवरी 2023 में कुल 31 दिन हैं।

उत्तर: जनवरी 2023 में कुल 31 दिन हैं।

प्रश्न 2

(ख) पूर्णिमा और अमावस्या किस दिनाँक और वार को पड़ रही है?

हल

कैलेंडर में देखें—
पूर्णिमा: 6 जनवरी 2023, शुक्रवार (Purnima appears in the Friday column on date 6)।
अमावस्या: 21 जनवरी 2023, शनिवार (Amavasya appears in the Saturday column on date 21)।

उत्तर: पूर्णिमा — 6 जनवरी 2023, शुक्रवार। अमावस्या — 21 जनवरी 2023, शनिवार।

प्रश्न 3

(ग) कृष्ण पक्ष की सप्तमी और शुक्ल पक्ष की सप्तमी में कितने दिनों का अंतर है?

हल

कैलेंडर में देखें—
कृष्ण पक्ष की सप्तमी: 14 जनवरी 2023 (शनिवार)।
शुक्ल पक्ष की सप्तमी: 28 जनवरी 2023 (शनिवार)।
अंतर: 28 − 14 = 14 दिन।

उत्तर: 14 दिनों का अंतर है (14 जनवरी से 28 जनवरी)।

प्रश्न 4

(घ) इस महीने में कृष्ण पक्ष में कुल कितने दिन हैं?

हल

कैलेंडर में पूर्णिमा 6 जनवरी (शुक्रवार) को पड़ रही है।
पूर्णिमा के अगले दिन से कृष्ण पक्ष शुरू होता है — अर्थात् प्रतिपदा (कृष्ण) = 7 जनवरी।

कृष्ण पक्ष अमावस्या पर समाप्त होता है — अमावस्या = 21 जनवरी।
गिनती: 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21
कुल = 21 − 7 + 1 = 15 दिन।

उत्तर: 15 दिन (7 जनवरी से 21 जनवरी तक)।

प्रश्न 5

(ङ) 'वसंत पंचमी' की तिथि बताइए।

हल

कैलेंडर में देखें — गुरुवार (Thursday) स्तंभ में 26 जनवरी 2023 पर 'वसंत पंचमी (शुक्ल)' लिखा है।
अतः वसंत पंचमी की तिथि है: 26 जनवरी 2023, गुरुवार, शुक्ल पक्ष पंचमी।

उत्तर: वसंत पंचमी: 26 जनवरी 2023 (गुरुवार), शुक्ल पक्ष पंचमी।